Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 5 | MAY 2019

मध्यप्रदेश व राजस्थान की लोक चित्रकला परंपरा : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दीपक कुमार भट्ट [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर (पेंटिंग विभाग) सीवीएम कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, सीवीएम विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर, आनंद, गुजरात.**

ABSTRACT:

भारत में लोक चित्रकला परंपरा समृद्ध रही है। भारतीय लोककला आमतौर पर देवी देवताओ की पूजा आराधना से सम्बंधित है । लोक कला या परंपरा सीधे लोगो से जुडी होती है, जिस कारण वो सरल और सहज होती है, इन कलाओ का मूल उद्देश्य साज -सज्जा से सम्बंधित रहा है अक्सर देखा गया है की कलाकार अपने आस पास के वातावरण से प्रभावित होता है, एक प्रतिभाशाली चित्रकार वो हैं, जो कला को सबसे आगे लाता हैं। मध्य प्रदेश एवं राजस्थान कला व पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। दुनिया भर से पर्यटक यहां सैर-सपाटे के लिए आते हैं। और यहां की कला सभ्यता व संस्कृति से प्रभावित होते हैं । दोनों ही स्थानों की लोक चित्र शैली का क्षेत्र अत्यन्त समृद्ध रहा है । मध्य प्रदेश की जनजाति क्षेत्र में जहा गोंड आर्ट , पिथोरा और गोदना प्रचलित शैलिया है, वही राजस्थान में लोक चित्रकलाएँ इसकी संस्कृति की तरह ही विविध हैं । राजस्थान की लोक चित्रकलाएँ लोकप्रिय हिंदू देवताओं, मानव चित्रों, रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों और प्रकृति के तत्वों के चित्रण से संबंधित हैं । यहाँ लघु चित्रण की चार प्रमुख मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती तथा ढूंढाड़, लघु चित्रण की शैलियों के साथ-साथ कई लोक चित्रकलाएं जैसे- फड़ , मांडना, पिछवाई कावड़ प्रचलित हैं।

KEYWORDS:
मांडना, पिछवाई, कावड़, लोक चित्रकलाएँ, जनजाति, भील, पिथोरा, संस्कृति, घोडा, भूरी बाई, कृष्णा, गोपिया, आदिवासी, गोंड आर्ट

मूल आलेख-

मध्य प्रदेश में बड़ी जनजातीय आबादी है । इन विभिन्न जनजातीय कला रूपों की जड़ें प्राचीन जनजातीय मान्यताओं और परंपराओं में हैं, जैसे- मध्य प्रदेश की सांझीफुली, मामुलिया व राजस्थान की सांझी चित्रण में कुवारी लड़किया अच्छे वर की प्राप्ति के लिए गाय के गोबर से दीवारों पर चित्र बना ती है । खुशहाली और उत्सव के अवसरों पर मध्य प्रदेश में चौक ,मोर्टे कला वही, राजस्थान में थापे। मोरनी, मंदना और मोराईला में महिलाओ द्वारा घरो में दीवारों पर मयूर की विविध आकृतिया बनाई जाती है परंपरागत चित्रण में जनजातीय क्षेत्र की महिलाये मुख्य रूप से भाग लेती है ये सहज चित्रण सीधी उनकी प्राचीन परम्पराओ से जुड़ा होता है जिसका सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व भी होता है । मध्य प्रदेश की गोंड और पिथोरा चित्र शैलिया देश भर में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है । पिथोरा में मूल रूप से हिन्दू देवी देवता का प्रतिनिधित्व करने के लिए विशेष रूप से घोड़ो का चित्रण किया जाता हैं । कोई भी दो चित्र सामान नहीं होते। इन्ही चित्रों में भाग्यशाली शुभंकर जैसे घोडा, सूर्य, चन्द्रमा, पशु पक्षियों एवं पेड़ो को अंकित किया जाता हैं । रंग चमकीले लाल, हरे, नारंगी ,नीले व् गुलाबी प्रमुख रूप से प्रयुक्त किये जाते है। इन चित्रों को शादी, फसल कटाई, त्यौहार और बच्चे के जन्म जैसे शुभ अवसरों पर चित्रित किया जाता है।

मध्य प्रदेश की दूसरी प्रमुख शैली 'गोदना' उनकी जीवन शैली की अभिन्न अंग है । इसी क्रम में गोंड पेंटिंग जिसका प्रमुख केंद्र पाटन गांव है, गोंड मानवीय गूढ़ रहस्यों, हास्य रंगो के पैटर्न का मिश्रित रूप है। पशु-पक्षियों, प्रकृति का इन कलाकारों ने मानवाकृतियों के साथ जोड़कर विविध सयोजन बनाये हैं । विशेष मिथक और किवदंतियो का भी समावेश हैं । सहज आकारों में चटख पीले, नीले, लाल व् सफ़ेद रंगो से सजाकर उनमे डॉट्स का विशेष अंकन किया जाता है गोंड आर्ट के सयोजन आज समसामयिक कलाकारों के लिए बहोत प्रेरणास्पद हैं । अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाने वाली भूरी बाई इस कला की मूल कलाकार हैं । वे पद्मश्री से सम्मानित हैं । उन्होंने इस क्षेत्र की महिलाओ में चित्रकारी का जूनून पैदा कर दिया हैं । वर्तमान में वे कैनवास पर ऐक्रेलिक रंगो से चित्रकारी कर रही है ।

राजस्थान की लोक चित्रण परंपरा में फड़, पिछवाई , कावड़ एवं मांडणा का विशिष्ट स्थान है। जिस तरह से मध्य प्रदेश में भील जाती में गोंड कला देवी-देवताओ को समर्पित है, ठीक उसी तरह राजस्थान की फड़ कला लोक देवताओ को समर्पित है जिसमे पाबूजी, देवनारायण, रामदेव जी, गोगाजी प्रमुख हैं। इन फड़ में लोक देवताओ के जीवन चरित्र का अंकन है, चौदवी शताब्दी में पाबूजी को लोक देवता के रूप में पूजा जाता था । फड़ एक आयताकार आकार में लाल, पीले नीले, हरे रंगो से निर्मित किया जाता है जिसका सामान्य आकर 15x5 फ़ीट होता है । राजस्थान की एक अन्य लोकप्रिय कला पिछवाई पेंटिग है । नाथद्वारा की प्रचलित लोक कला पिछवाई श्रीनाथ जी के पीछे का पर्दा है, कालांतर में इसमें साज सज्जा का प्रचलन बढ़ा और अंत में इसका स्वरुप कलात्मक पेंटिंग के रूप में प्रचलित हुआ। इस पर प्रमुख रूप से राधा कृष्णा, गोपिया, गाय, कमल, होली दिवाली, जन्माष्टमी अदि विषयो का अंकन हुआ । राजस्थान की सबसे प्राचीन लोक कला में मांडणा को जाना जाता है जो आज भी बहोत प्रचलित है यह आदिवासी महिलाओ द्वारा बनाया जाता है दीवारों एवं फर्श पर मांडणा सजाया जाता है ।

जिस तरह गोंड आर्ट में आकारो में पैटर्न बनाये जाते है उसी तरह यहाँ मांडने में भी पैटर्न देखे जा सकते है जैसे फूल, पत्तिया, त्रिभुज, आयात, वृत्त आडी, तिरछी रेखाओ से आबद्ध गेरू रंग की पृष्ठ भूमि में सफ़ेद रंग से चित्रित किये जाते है।

राजस्थान की एक और विशिष्ट कला जिसे 'कावड़' के नाम से जाना जाता है, इसकी परंपरा सदियों पुरानी है । कावड़ एक प्रकार का काष्ठ कथानक स्वरुप है । कावड़ मूलतः राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में जन्मा। यह एक लकड़ी का बॉक्स है जिसको खोलने पर कई प्रकोष्ठ खुलते है इसके प्रत्येक भाग पर रंगीन कथानक चित्रित होता हैं ।

निष्कर्ष:

आधुनिक चित्रकार परंपरागत लोक चित्र कलाओ से समय-समय पर प्रेरणा लेकर अपना सृजन करता रहता है । ग्राम्य जीवन की सरलता समस्त लोक कलाओ में देखी जा सकती है। ये लोक चित्रकला की परंपरा हमारे सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण विरासत है ।

1.

2.

3.

4.

चित्र: 1-फड़, 2-पिथोरा, 3-गोंड कला, 4-कावड़

REFERENCES

1. **Vibhanshu Chaturvedi :Gond and Bhil: A comparative analysis -https://textilevaluechain.in/in-depth-analysis/articles/traditional-textiles/phadpainting-a-folk-art-of-rajasthan/)**

2. Aesthetics And Visual Connotations Of Rajasthani Folk Arts: A Critical Study) Dr. Pinak Pani Nath